JOURNAL OF MASS MEDIA AND MANAGEMENT

ISSN: 3049-3021 (Online)

Journal Website: www.jmmm.in

Research Article

SR: JMMM/09/2026

ISSUE:03

पर्यावरण संचार के अग्रदूत: महात्मा गांधी द्वारा समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और पुस्तकों में प्रस्तुत सतत विकास का दृष्टिकोण

अरुण कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग आईएमएस नोएडा

डॉ. कुमारी पल्लवी, असिस्टेंट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज विभाग, स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसेज, क्राइस्ट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दिल्ली एनसीआर

हर्षित कुमार, शोधार्थी हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

साराश

पर्यावरण संकट आज मानव सभ्यता के सामने सबसे बड़ी चुनौती बनकर खड़ा है। जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन इस बात का प्रमाण है कि आधुनिक विकास मॉडल प्रकृति के साथ संतुलन बनाने में विफल रहा है। ऐसे समय में महात्मा गांधी के विचार न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि दिशा-सूचक भी हैं। गांधी ने पर्यावरण को कभी अलग विषय नहीं माना। उनके लिए सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और स्वदेशी के सिद्धांत ही टिकाऊ जीवन शैली की नींव थे। महत्वपूर्ण बात यह है कि गांधी जी ने अपने इन विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रिंट मीडिया को सबसे सशक्त माध्यम के तौर पर चुना। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें गांधी जी के लिए केवल सूचना के साधन नहीं थे, बल्कि वे जन-जागरण, नैतिक शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के हथियार थे। महात्मा गांधी आधुनिक युग के उन शुरुआती विचारकों में से थे, जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की नींव रखी थी। यद्यपि उनके समय में "ग्लोबल वार्मिंग" या "सस्टेनेबिलिटी" जैसे तकनीकी शब्दों का चलन नहीं था, लेकिन उनकी जीवनशैली और दर्शन पूरी तरह से प्रकृति के अनुकूल थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने जीवन में विभिन्न रचनात्मक काम किए जिसमें पर्यावरण संरक्षण उनका सबसे महत्वपूर्ण काम रहा है। उन्होंने अपना पूरा जीवन पर्यावरण के साथ सह अस्तित्व बना कर रखने और पर्यावरण के अनुकूल निरंतर जीवनशैली को अपनाने को लेकर जोर दिया। इसका जिक्र उन्होंने अपनी आत्मकथा सत्य के साथ प्रयोग और हिंद स्वराज में भी किया है। उन्होंने पूरा जीवन जल, जंगल और जमीन के साथ ही यहां पर रहने वाले जीवों के संरक्षण को लेकर जोर दिया। इसके लिए उन्होंने विभिन्न रचनात्मक कार्य भी किए। हम अपने इस शोध पत्र के जरिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के द्वारा पर्यावरण संरक्षण को लेकर किए गए विभिन्न कार्यों का अध्ययन करेगें। इसके साथ ही देश में बढ़ रहे पर्यावरण प्रदूषण के साथ ही अन्य विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं के निराकरण के लिए महात्मा गांधी के विचार कितना प्रासंगिक है, इसकी भी समीक्षा करेगें।

कीवर्ड (Keywords): *महात्मा गांधी, पर्यावरणीय आंदोलन,स्वराज, स्वदेशी, ग्राम स्वाराज, पर्यावरण संकट, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, आत्मनिर्भर भारत, सतत विकास*

प्रस्तावना

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी वह बिन्दु हैं जिसपर आकर समाज की सभी धाराएं एकाकार हो जाती हैं। ज्ञापन और निवेदन के माध्यम से राजनीति करने वाले उदारवादी हों या आंदोलन के माध्यम से मांग पूरी करवाने की इच्छा रखने वाले उग्रवादी हों, समाज सुधार को राष्ट्रीय जागरण का माध्यम मानने वाले समाज-सुधारक हों या पुनर्जागरण की इच्छा रखने वाले सांस्कृतिक राष्ट्रवादी हों, धरती का सीना चीरकर अन्न उपजाने वाले किसान हों या जमीन पर मालिकाना हक रखने वाले जमींदार, कारखानों को चलाने वाले मजदूर हों या उसके मालिक, सभी महात्मा गांधी के अंदर अपना नेतृत्व देखते थे (उपाध्याय, 2025)। पर्यावरणीय आंदोलनों के उदय से कई दशक पहले, गांधीजी ने अति-उपभोग, मानव और प्रकृति के प्रति हिंसा आदि जैसे बुनियादी पर्यावरणीय मुद्दों को उठाया था। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पर्यावरणीय अन्याय के विरुद्ध कई आंदोलन चल रहे हैं। इनमें से कुछ हिंसक प्रकृति के हैं, लेकिन भारत में पर्यावरण आंदोलन असहयोग और अहिंसा की गांधीवादी परंपराओं से प्रेरित हैं (ए.एस, 2025)। गौरतलब है कि देश की राजधानी दिल्ली में नवंबर महीने में वायु गुणवत्ता सूचकांक में हवा में प्रदूषण का स्तर 400 से भी अधिक रहा है। यह वायु प्रदूषण के सूचकांक में गंभीर श्रेणी से भी ऊपर रहा है। इस हवा में सांस लेना दिन में आठ सिगरेट पीने जितना खतरनाक है (बोर्ड, 2025)। वहीं दिल्ली लगे हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में भी हवा की स्थित इसी प्रकार की रही है। इस प्रकार की प्रदूषित हवा लोगों के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल रही है। इसके साथ देश में बढ़ता प्रदूषण यह भारत की जीडीपी पर भी बोझ बढ़ा रहा है (साहू, 2016)। इन हालात में हमें महात्मा गांधी के द्वारा बताए गए रचनात्मक मार्ग अपनी तरफ खींचते है। जो कि पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली अपनाने की वकालत करते हैं। महात्मा गांधी ने कभी पर्यावरण संरक्षण शब्द का प्रयोग नहीं किया, लेकिन उन्होंने जो कहा और किया, वह उन्हें एक पर्यावरणविद् बनाता है। यद्यपि उनके समय में पर्यावरणीय समस्याओं को इस रूप में मान्यता नहीं दी गई थी, फिर भी अपनी अद्भुत दूरदर्शिता और अंतर्दृष्टि से उन्होंने भविष्यवाणी की कि चीजें गलत दिशा में बढ़ रही हैं। 1909 की शुरुआत में अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में उन्होंने मानव जाति को अनियंत्रित उद्योगवाद और भौतिकवाद के खिलाफ आगाह किया (श्रीकृष्ण झा, 2020)। वह नहीं चाहते थे कि भारत इस संबंध में पश्चिम का अनुसरण करे और चेतावनी दी कि यदि भारत, अपनी विशाल जनसंख्या के साथ, पश्चिम की नकल करने की कोशिश करता है, तो पृथ्वी के संसाधन पर्याप्त नहीं होंगे (शेठ, 2020)।

उन्होंने 1909 में भी तर्क दिया कि औद्योगीकरण और मशीनों का लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है (गांधी, 1947)। उन्होंने नदियों और अन्य जल निकायों को प्रदूषित करने के लिए लोगों की आलोचना की। उन्होंने लोगों से सादगी से जीवन जीने का आग्रह किया ताकि दूसरे भी सादगी से जी सके (कुमारिया, 2025)। क्योंकि उनका मानना था कि धरती हर इंसान की जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त है, लेकिन हर इंसान के लालच को नहीं। इसलिए अमीरों को न केवल अपनी इच्छाओं को सीमित रखना चाहिए, बल्कि अपने धन को गरीबों के लिए 'अमानत' मानकर गरीबों के कल्याण के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। यह तभी संभव है जब लोग अपनी वास्तविक और कृत्रिम जरूरतों में अंतर कर सकें और कृत्रिम जरूरतों पर नियंत्रण कर सके (कौशिक, 2025)। उनके लिए वास्तविक जरूरत का मतलब था कि केवल वही चीजें हासिल करना जो उस समय के लिए बिल्कुल जरूरी हों। उनके लिए यह न केवल आज के वंचितों की मदद करेगा, बल्कि अगली पीढ़ी के लिए पर्यावरण की रक्षा में भी मदद करेगा क्योंकि उनके लिए धरती, हवा, जमीन और पानी हमारे पूर्वजों की विरासत नहीं, बल्कि हमारे बच्चों का ऋण हैं। इसलिए हमें अगली पीढ़ी को कम से कम वैसा ही सौंपना चाहिए जैसा हमें सौंपा गया था (त्रिपाठी, 2007)। इसी बिंदू को ध्यान में रखते हुए महात्मा गांधी ने स्वादेशी आंदोलन की शुरुआत की थी। जिससे देश भर में बढ़ रहे विदेशी कपड़े के साथ ही अन्य उत्पादों पर रोक लग सके और स्वादेशी उत्पादों को लोग अपनाएं। महात्मा गांधी जी ने स्वादेशी आंदोलन के जरिए देश के कुटीर और लघु उद्योगों को बढ़ावा दिया। इससे देश में रोजगार सृजन के भी अवसर बढ़े। उनका यह भी मानना था कि दुनिया में जो बदलाव हम देखना चाहते हैं, वह खुद पर होना चाहिए और इसलिए उन्होंने जो उपदेश दिया, उसका पालन किया। उनका जीवन ही उनका संदेश था। इसलिए उन्होंने और उनकी पत्नी ने अपनी सारी संपत्ति दान कर दी। उनके पास पहने हुए कपड़ों और एक-दो खुले कपड़ों के अलावा कुछ नहीं था (शास्त्री, 1930)। वे कागजों के टुकड़ों से छोटे-छोटे नोट्स लिखते थे और लिफाफे उलटकर दोबारा इस्तेमाल करके चिट्ठियाँ भेजते थे। यहाँ तक कि जब वे बहती साबरमती नदी के पानी से नहाते थे, तब भी वे जानबूझकर नहाने के लिए जरूरी न्यूनतम पानी ही इस्तेमाल करते थे। गांधीजी ने प्रकृति के साथ सहजीवी संबंध की वकालत की, संसाधन संरक्षण, पुनर्चक्रण और सामग्रियों के "संयमित" उपयोग पर ज़ोर दिया। उनका अहिंसा का सिद्धांत पर्यावरणीय नैतिकता तक विस्तृत है, जो प्राकृतिक दुनिया के साथ सामंजस्य को बढ़ावा देता है, जो सतत विकास लक्ष्यों के पर्यावरणीय पहलुओं के अनुरूप है (एएस, 2025)।

साहित्यिक समीक्षा (Literature Review)

गांधी के पर्यावरण को लेकर हरित विचार हमें लोगों की जरूरतों के साथ प्रकृति को तालमेल बिठाने का एक नया नज़रिया देते हैं। गांधी आज के ज़माने में पर्यावरणविद नहीं थे। हालांकि उन्होंने कोई हरित दर्शन नहीं बनाया या प्रकृति पर कोई कविता नहीं लिखी, लेकिन उन्हें अक्सर अनुप्रयुक्त मानव पारिस्थितिकी का प्रचारक कहा जाता है। सत्य और अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह, सादी जीवनशैली और विकास से जुड़े उनके विचार बताते हैं, कि प्रकृति और हमारे साथियों को कोई नुकसान पहुँचाए बिना सतत विकास कैसे मुमकिन है (एएस, 2025)। (गांधी और पर्यावरण 2021) यह पेपर गांधी जी के आधुनिकीकरण के विचारों को लेकर बताता है। आज के समय में पर्यावरण पर गांधी के विचार बहुत कीमती हैं। उन्होंने आने वाले खतरे को देखा और बताया। "प्रकृति नरम है। यह हमें हमारे पापों की तुरंत सजा नहीं देती।" ये शब्द बहुत कुछ कहते हैं। इसका लंबे समय तक चलने वाला असर होता है, जैसा कि हम अपने आस-पास हो रही घटनाओं को देखते हैं। प्रकृति पर उनके विचार उनकी ज्यादातर रचनाओं में मिलते हैं। उनका मशहूर कोट – "प्रकृति के पास सबकी जरूरतें पूरी करने के लिए काफी है, लेकिन सबका लालच पूरा करने के लिए नहीं" – प्रकृति और पर्यावरण के लिए उनकी चिंता दिखाता है (दास, 2021)। (गांधी के पर्यावरण पर विचार 2020) यह लेख महात्मा गांधी के प्रकृति को लेकर की गई चिंता को दिखाता है। प्रकृति के संरक्षण के लिए गांधीजी की चिंता उनके प्रकाशन 'हिंद स्वराज' और 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' और 'हरिजन', 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' जैसे प्रकाशन में दिखती है। वह सफाई, साफ-सफाई और स्वच्छता को प्राथमिकता देते थे और लोगों से अपनी ज़रूरतें कम करने की अपील करते थे ताकि प्रकृति पर कम बोझ पड़े (दास, 2021)। (पर्यावरण और सतत विकास पर महात्मा गांधी के विचार 2023) यह पेपर पर्यावरण और सतत विकास के तरीकों के बारे में गांधी के फिलोसोफिकल और प्रैक्टिकल नजरिए पर गहराई से बात करता है। प्रकृति के प्रति गांधी का आदर, सादगी और आत्मनिर्भरता, इंसानों और पर्यावरण के बीच अच्छे रिश्ते के लिए उनके विजन के बुनियादी पहलू हैं। गांधी की सादगी, आत्मनिर्भरता और प्रकृति के साथ तालमेल की फिलोसोफी उनके पर्यावरण के नजरिए का आधार बनी। उन्होंने सभी जीवों के आपस में जुड़े होने पर जोर दिया। उन्होंने इंसानियत और पर्यावरण के बीच एक सह अस्तित्व की वकालत की (सरिका वर्मा, 2023)। (महात्मा गांधी: 20वीं सदी की शुरुआत में भारत में पर्यावरण स्थिरता के एक प्रैक्टिकल कार्यकर्ता 2023) यह पेपर बताता है,कि गांधी जी को भारत में नवीन पर्यावरणीय आंदोलन के जन्मदाता हैं। उन्होंने पर्यावरण की हो रही छति और उसके संरक्षण के साथ ही सतत विकास पर जोर दिया। वह अपने समय के सबसे आधुनिक पर्यावरणविद् थे। उन्होंने पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों संरक्षण के लिए लोगों को एकत्रित किया और एक जन आंदोलन का रूप दिया (सादिका, 2023)।

उद्देश्य (Objectives)

1. देश में बढ़ते पर्यावरणीय संकट के सतत समाधान पर महात्मा गांधी के विचारधारा की प्रासंगिकता को समझना।

2. महात्मा गांधी के पर्यावरण संरक्षण को लेकर किए गए कार्यों का विश्लेषण करना।

शोध विधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र महात्मा गांधी के विचारों, दर्शन और साहित्य में अंतर्निक हित पर्यावरण संरक्षण की चेतना का विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन के अंतर्गत गांधी जी द्वारा समय-समय पर रचित कृतियों, जनसभाओं में दिए गए ऐतिहासिक भाषणों तथा उनके द्वारा संपादित प्रमुख समाचार पत्रों की गहन समीक्षा की गई है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में उनके द्वारा दक्षिण अफ्रीका में प्रारंभ किए गए पत्र 'इंडियन ओपिनियन' (1903) तथा भारत में संचालित 'यंग इंडिया' (1919), 'नवजीवन' (1919) और 'हरिजन' (1933) के संपादकीयों व आलेखों का विषयगत विश्लेषण किया गया है। इसके साथ

ही, उनकी युगांतरकारी पुस्तकों 'हिंद स्वराज', 'मेरे सपनों का भारत' तथा आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में व्यक्त पारिस्थितिकीय विचारों का पुनर्मूल्यांकन किया गया है।

प्राथमिक स्रोतों के अतिरिक्त, प्रस्तुत अध्ययन में गांधीवादी पर्यावरण-चिंतन पर विभिन्न कालखंडों में अन्य प्रमुख विद्वानों, पर्यावरच णविदों एवं शोधकर्ताओं द्वारा किए गए कार्यों व समीक्षाओं को भी समाहित किया गया है। शोध का मुख्य उद्देश्य समकालीन विश्व में तेजी से बढ़ते वैश्विक तापन, प्रदूषण और संसाधनों के अति-दोहन जैसे पर्यावरणीय संकटों के समाधान हेतु गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता को रेखांकित करना है। यह पत्र यह प्रतिपादित करता है कि सीमित आवश्यकताओं, अपरिग्रह और अहिंसक जीवनशैली पर आधारित गांधीवादी मॉडल ही मानव और प्रकृति के बीच परस्पर संतुलन व सामंजस्य स्थापित कर सकता है।

परिणाम एवं चर्चा (Result & discussion)

महात्मा गांधी ने साउथ अफ्रीका में अपने पहले सत्याग्रह आंदोलन और उसके बाद हमारे देश के आजादी के आंदोलन में उन्होंने औपनिवेशिक सरकार के द्वारा बताई जा रही औपनिवेशिक आधुनिकता की आलोचना किया। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक सरकार जिस आधुनिकता की बात कर रही है। वह धरती की क्षमता से बाहर हैं। धरती पर सीमित संसाधन हैं, जिनका संरक्षण और सतत उपभोग करना होगा। इसलिए, उनके नेतृत्व में हमारी आज़ादी की लड़ाई एक तरह से सतत विकास के लिए इतिहास की पहली लड़ाई थी। इस बात को समय-समय पर दिए गए उनके भाषण सबित करतें है (साहू, 2016)। महात्मा गांधी धरती के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने में अपने समय से बहुत आगे थे। ये चुनौतियाँ एक ऐसी जीवनशैली से पैदा हुई थी जिसमें इच्छाएँ और ख्वाहिशें बढ़ती जा रही थीं और उन्हें पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाती थी। ऐसे समय में जब इंसान ग्लोबल वार्मिंग की बढ़ती रफ्तार की वजह से खत्म होने के खतरनाक खतरे का सामना कर रहा है, गांधीजी के विचारों को फिर से खोजना और उन्हें अमल में लाना जरूरी है। यह खुशी की बात है कि दुनिया के कई हिस्सों में लोग उनके आदर्शों से प्रेरित हो रहे हैं और सही कदम उठा रहे हैं। यह जर्मनी में ग्रीन पार्टी बनाने और प्रकृति और परिस्थितिकी के हिसाब से नीतियां बनाने की पहल में सबसे अच्छी तरह दिखता है (साहू, 2016)। सतत विकास लक्ष्यों की सबसे बड़ी खासियत यह है, कि यह सतत विकास पर जोर देता है। अगर हम देखें तो सतत विकास का यह विचार गांधीजी की शिक्षाओं में भी खास तौर पर शामिल है। उन्होंने कहा कि, "हम आज जो करते हैं, वही हमारा भविष्य है।" उन्होंने यह भी कहा, "हमें कुदरती चीजों – पानी, हवा, जमीन – को अपने पुरखों से मिली विरासत के तौर पर नहीं देखना चाहिए।" वह उन्हें "हमारी अगली पीढ़ी का दिया हुआ कर्ज़" मानते थे (सादिका, 2023)। संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत विकास के लिए एजेंडा 2030 एक ग्लोबल ब्लूप्रिंट है जिसे 2015 में गरीबी मिटाने, धरती की रक्षा करने और सभी के लिए खुशहाली सुनिश्चित करने के मकसद से अपनाया गया था। इसके केंद्र में 17 सतत विकास लक्ष्य हैं। जिन्हें 2030 तक हासिल करने के लिए लक्ष्य तय किए गए हैं। गांधीजी सतत इस्तेमाल और उत्पादन के व्यक्तिगत अभ्यास के मिसाल थे। वह अपने रचनात्मक कार्यों के जरिए अपनी जरूरत की चीजों को खुद ही उत्पादन किया करते थे। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के लिए हर किसी को जिम्मेदारी निभानी होगी। जैसा कि संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत विकास लक्ष्यों में भी उम्मीद की गई है (देबप्रिया, 2019)। गांधी जी का स्वराज का विचार सतत विकास के लक्ष्यों को पाने की दिशा में एक राह दिखाता है। वह तेजी से बढ़ रहने नगरीकरण को लेकर अपने विचार इस तरह बताए: "यह गांवों से दोहरा पलायन की प्रक्रिया है। भारत में नगरीकरण उसके गांवों और गांव वालों के लिए एक धीमी लेकिन पक्की मौत है। यह भारत की 90 प्रतिशत आबादी का कभी भी सहायता नहीं कर सकता, जो उसके 7,00,000 गांवों में रहती है"। वह छोटे गांवों से लघु एवं कुटीर उद्योगों को हटाने के विचार के हमेशा से खिलाफ रहें हैं। क्योंकि उन्हें लगता था कि इससे हाथ और दिमाग का अच्छे से इस्तेमाल करने का जो भी थोड़ा-बहुत मौका बचा था, वह भी खत्म हो जाएगा। "और जब गांव के हस्तशिल्प गायब हो जाएंगे, तो जो गांव वाले साल में छह या चार महीने सिर्फ अपने मवेशियों के साथ खेतों में काम करते हैं, वे जानवर के स्तर पर आ जाएंगे और उन्हें न तो मन से सही पोषण मिलेगा और ना ही उनका जीवन गांव में चल पाएगा। जिसकी वजह से वह मजबूर होकर शहरों की तरफ पलायन करेंगे (तिवारी, 2019)। प्रकृति के प्रति गांधी जी की नज़रिया 'जरूरत' और 'लालच' के नियम के आस-पास घूमता है; इसलिए प्रकृति की देन संसाधनों का इस्तेमाल सिर्फ़ अपनी जरूरतों के हिसाब से ही किया जा सकता है। गांधी जी की जिंदगी उनके आस-पास, खुद के साथ और दूसरों के साथ, उनके मूल्यों के साथ और उनके पर्यावरण के साथ पूरी तरह से तालमेल में थी। उनके विचारों और उनके जीने के तरीके में बिल्कुल भी कोई विरोधाभास नहीं था। उन्होंने कहा कि, 'मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह प्रकृति का बुनियादी नियम है, बिना किसी छूट के कि प्रकृति हर दिन हमारी जरूरतों के लिए काफी पैदा करती है, और अगर हर व्यक्ति अपनी जरूरतों को सीमित और संयमित करके प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करे तो इस दुनिया में कोई व्यक्ति गरीब नहीं रहेगा (हरिजन, 2025)। गांधी जी का मानना था कि भारत गांवों में बसता है। और तकनीकी, मशीनरी और औद्योगीकरण के जरिए गांव की संस्कृति और सभ्यता को खत्म करना, उनके लिए पाप है। उन्होंने युवाओं को चेतावनी दी कि वे वर्तमान सभ्यता की चमक-दमक में न बहकें। उन्होंने गांव की जिंदगी को लक्ष्य बताया, क्योंकि भारत ग्रामीण सभ्यता का वारिस है। इसलिए, अगर युवा 'इसे उखाड़कर इसकी जगह शहरी सभ्यता बसाना चाहते हैं' तो उनके इरादे गलत हो सकते हैं। वह ऐसी मशीनरी के इस्तेमाल के भी खिलाफ थे जिसका मकसद लोगों को उनके रोजी-रोटी के साधनों से हटाना हो। वह चरखे, हाथ से चलने वाली मशीनरी को बढ़ावा देने के पूरी तरह पक्ष में थे, न कि "ऐसी मशीनरी जो उन लोगों की मेहनत छीन ले जिन्हें और कोई काम नहीं दे सकता। हमें जिस चीज से डरना चाहिए, वह है ऐसी बड़ी मशीनरी जो हाथ से नहीं बल्कि भाप, बिजली वगैरह जैसी मशीनी ताकत से चलती हो (गांधी, 1954)। गांधी जी का ग्राम स्वराज के बारे में विचार था कि यह एक पूरा गणतंत्र हो, जो अपनी जरूरतों के लिए अपने पड़ोसियों से आजाद हो, और फिर भी कई दूसरे पड़ोसियों के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हो, जहाँ निर्भरता एक जरूरत हो। इसलिए हर गाँव की पहली चिंता अपनी खाने की फसलें और कपड़े के लिए कपास उगाना होगी। उसके पास अपने मवेशियों के लिए एक संरक्षित स्थान, बड़ों और बच्चों के लिए मनोरंजन और खेल का मैदान होना चाहिए। फिर अगर ज्यादा जमीन होगी, तो वह पैसे देने वाली नकदी फसलें उगाएगा। गाँव में एक थिएटर, स्कूल होगा। गांव में वर्षा जल संरक्षण के लिए तालाब के साथ ही स्वच्छ एंव पीने योग्य पानी के

लिए साफ कुंए भी हों। जिससे गांव के लोग अपनी जरूरतें गांव में ही पूरी कर सकें । स्वदेशी की भावना हमें अपने गाँवों में बनी वस्तुओं का उपभोग करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे लघु उद्योगों को बढ़ावा मिलता है जो आम किसानों और बुनकरों को खुशहाल जीवन जीने में मदद करते हैं। आवश्यकताओं की सीमा गांधीवादी अर्थशास्त्र का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। गांधी ने हमें अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम करने का आग्रह किया ताकि उपभोग कम से कम हो और इस प्रकार खतरनाक अपशिष्टों से बचकर प्रकृति पर बोझ कम हो। हमारी सभ्यता, संस्कृति और स्वराज आवश्यकताओं की सीमा पर निर्भर हैं। गांधी ने महसूस किया कि आधुनिक सभ्यता और बाजार अर्थशास्त्र आम लोगों की इच्छाओं और आवश्यकताओं को कई गुना बढ़ा देते हैं। रोटी-मजदूरी गांधी जी की एक और महत्वपूर्ण आर्थिक अवधारणा है। उन्होंने शारीरिक श्रम को महत्व देते हुए कहा, "वर्षा बौद्धिक करतबों से नहीं, बल्कि विशुद्ध शारीरिक श्रम से होती है। यह एक सुस्थापित वैज्ञानिक तथ्य है कि जहाँ जंगल पेड़ों से रहित होते हैं, वहाँ वर्षा रुक जाती है, जहाँ पेड़ लगाए जाते हैं, वहाँ वर्षा आकर्षित होती है और वनस्पति की वृद्धि के साथ प्राप्त होने वाले पानी की मात्रा बढ़ जाती है (ए.एस, 2025)। गांधी एडोल्फ जस्ट की किताब 'रिटर्न टू नेचर' से बहुत प्रभावित थे, जिससे उनका यह यकीन और पक्का हो गया कि अगर कोई इंसान अच्छी ज़िंदगी जीना चाहता है, तो उसे अपनी ज़िंदगी सिर्फ़ इंसानों के साथ ही नहीं, बल्कि सभी जीवों - पक्षियों, जानवरों, पौधों और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के साथ शेयर करनी होगी। इंसान को प्रकृति से जो कुछ भी लेना है, उसे उसे वापस करना चाहिए। उन्हें जानवरों या दूसरे जीवों के खिलाफ़ किसी भी तरह की हिंसा से नफरत थी। इस तरह गांधी ने सभी जीवों की एकता की अपनी भावना ज़ाहिर की। उन्होंने 1937 में हरिजन में लिखा, "मेरा मानना है कि भगवान के सभी जीवों को उतना ही जीने का अधिकार है जितना की हमें है (हरिजन, 2025)। पश्चिमी परंपरा में इंसान धरती से अलग एक चीज़ था जिसे जीतने के लिए उसे बढ़ावा दिया जाता था, जबकि भारतीय परंपरा में धरती उसकी माँ थी जिसे उसे पूजना चाहिए था। गांधीजी हमारी परंपरा से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने सत्य और अहिंसा पर ज़ोर दिया। गांधीजी के शब्दों में "इंसान में जीवन बनाने की शक्ति नहीं है, इसलिए उसे जीवन को नष्ट करने का कोई अधिकार नहीं है।" इंसान को ऊँची काबिलियत इसलिए दी गई है ताकि वह छोटे जीवों के प्रति दयालु हो सके (राजगोपालन, 2025)। गांधी इस मायने में एक गहरे परिस्थितिविज्ञानशास्त्री थे कि वे प्रकृति को इसलिए महत्व नहीं देते थे क्योंकि यह इंसान के लिए उपयोगी है, बल्कि इसलिए देते थे क्योंकि यह भगवान की रचना है और इसलिए इसे जितना हो सके उतना साफ-सुथरा रहना चाहिए। गांधी जी हमेशा कहते थे कि ब्रह्मांड में मौजूद हर चीज़ एक ही सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान परमात्मा का हिस्सा है और इसलिए उसका अपना अधिकार है। इसलिए गांधी ने जरूरतों की सीमाओं पर ज़ोर दिया ताकि प्रकृति पर इंसान का दबाव कम से कम हो सके (कुमारिया, 2025)। गांधी के समय पर्यावरण की चिंता बहुत कम थी, लेकिन ग्राम स्वराज, स्वदेशी, सर्वोदय वगैरह पर उनके विचारों ने उन्हें पर्यावरणवाद का समर्थक बना दिया। उन्हें अक्सर गहरे परिस्थितिक नजरिए वाला इंसान माना जाता है। गांधी के विचारों का इस्तेमाल पर्यावरण दर्शन की अलग-अलग धाराओं में दुनिया भर के अलग-अलग पर्यावरण आंदोलनों ने बड़े पैमाने पर किया है (कुमारिया, 2025)। "धरती के पास हमारी ज़रूरत के लिए काफी संसाधन हैं, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं।" गांधी की यह सबसे ज्यादा कही जाने वाली बात प्रकृति और पर्यावरण के लिए उनकी चिंता को दिखाती है। वर्ष 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन या 1992 के रियो सम्मेलन जैसे किसी भी अंत्तराष्ट्रीय सम्मेलन के होने से बहुत पहले और लगभग सौ साल पहले, गांधी ने पर्यावरण के लिए अपनी चिंता जाहिर की थी। यह चिंता उनके भाषणों, लेखों और मजदूरों को दिए गए उनके संदेशो में साफ दिखती थी (ईज्ञानकोश, 2014)। गांधी बेशक एक दूरदर्शी इंसान थे। गांधी के अनुसार, प्रकृति प्रेरणा और शक्ति का स्रोत है, शोषण का नहीं। अपने एक पत्र में वे लिखते हैं, 'प्रकृति मेरी प्रेरणा के लिए काफी है। क्या मैंने तारों के उस अद्भुत रहस्य को बार-बार नहीं देखा है, उस महान नज़ारे से कभी नहीं थका। भगवान के काम के आगे, क्या इंसान का काम बेकार नहीं हो जाता ? गांधी जी ने सेहत बनाए रखने के लिए सादा और सात्विक खाना खाने की भी सलाह दी। उन्होंने जोर देकर शाकाहार की वकालत की और मांस खाने से नफरत की। उन्होंने कहा कि इंसान सिर्फ मांस से कहीं ज़्यादा है, और हमें इंसान के अंदर की आत्मा की चिंता है क्योंकि इंसान मांसाहारी जानवर के तौर पर पैदा नहीं हुआ था; उसे धरती पर उगने वाले फल और जड़ी-बूटियाँ खानी थीं और जो प्रकृति में बहुत ज्यादा मिलती हैं। बीमारी के समय भी उन्होंने अपनी इस बात से हटने से मना कर दिया। प्राकृतिक चिकित्सा उपचार और मांस खाने से परहेज़ के उनके प्रयोग को दूसरे जीवों के प्रति उनके प्रेम और अहिंसा के तौर पर समझा जा सकता है (ईज्ञानकोश, 2014)। गांधी जी हमेशा लघु उद्योग और गांव के उद्योग को बढ़ावा देने के पक्ष में थे। क्यों कि वह लोगों की रचनात्मक और हस्तशिल्प को निखारने और उनको हमेशा आत्मनिर्भर बनने पर जो देते थे। उनका मानना था कि इससे बेरोजगारी की समस्या हल करने में मदद मिलेगी, साथ ही जरूरतमंदों को नौकरी मिलेगी और देश की दौलत बढ़ेगी। गांव के विकास से गांव के लोगों का रोजगार की तलाश में शहरों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन भी रुकेगा, जिससे शहरी संसाधनों पर कोई दबाव नहीं पड़ेगा। आज के संदर्भ में इसका बहुत कुछ मतलब निकाला जा सकता है, जहां गांव से शहरों की ओर पलायन ने पानी और बिजली जैसे बेसिक संसाधनों की सप्लाई पर बहुत ज्यादा दबाव डाला है, इसके अलावा जगह की कमी और शहरी झुग्गियों के बनने से जाम भी लगा है, जहां पर लोग आज बेहद अमानवीय हालात में रहने को मजबूर हैं। इन स्थानों पर स्वास्थ्य और साफ- सफाई का कोई इंतजाम नहीं है। विकास का गांधीवादी मॉडल ज्यादातर प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। जो कि गांवों में बहुत ज़्यादा हैं, जिसका केंद्र गांव है, जो की मुख्य रूप से खेती पर केंद्रित है (गांधी, 1947)। पर्यावरण पर गांधी के विचारों में नैतिकता, अध्यात्मिकता और अहिंसा का मूल्य मुख्य रूप से शामिल रहा है। उनके लिए, इंसान के विकास की पहचान भौल तिकवाद या उपभोगितावाद में नहीं, बल्कि अध्यात्मिक आत्म-साक्षाब त्कार में थी, एक ऐसा चरित्र जो नैतिकता और अहिंसा के गुणों से भरा हो। भौतिक चीजों की चाहत उनके लिए अनजान थी क्योंकि यह किसी के आत्म-साक्षात्कार के रास्ते में रुकावट डालती थी। उनका सादा जीवन और उच्च विचार सभी जीवित प्राणियों के लिए उनके प्यार को दोहराते थे, जो भगवान की रचना का ही एक रूप है। इस तरह अहिंसा की उनकी अवधारणा में सभी जीवित प्राणी शामिल थे और उनके विचारों और कामों में जीवन के शाश्वत मूल्य शामिल थे (गांधी ए. , 1947)। पर्यावरणीय चेतना एक ऐसी घटना है जिसने पिछले लगभग पाँच दशकों में ही गति पकड़ी है। लेकिन यह विश्वदृष्टि, परंपराओं, संस्कृति, धर्म और लोककथाओं में अंतर्निहित है। पारिस्थित्त तिकी एक ऐसा विषय है जो जीवों और उनके पर्यावरण के बीच के संबंधों को समझने का प्रयास करता है। मानव पारिस्थितिकी, मनुष्य

और उसके पर्यावरण को एक एकीकृत इकाई के रूप में देखती है। हर चीज को अलग-अलग श्रेणियों में बाँटने की पश्चिमी प्रवृत्ति, पारिस्थितिक दृष्टिकोण से मेल नहीं खाती। गांधीजी हर चीज़ को एक दूसरे से जुड़े हुए रूप में देखते थे। उनके लेखन में, हमें अर्थशास्त्र, राजनीति और समाजशास्त्र के तत्व नैतिकता से प्रेरित अंतर्संबंध से ओतप्रोत मिलते हैं। गांधीजी ने कहा कि 'मैं अद्वैत में विश्वास करता हूँ, मैं मनुष्य और, इस मामले में, सभी जीवित प्राणियों की अनिवार्य एकता में विश्वास करता हूँ (मूलक्कट्टू, 2025)। महात्मा गांधी की पत्रकारिता में पर्यावरण संरक्षण के विचार उनकी अहिंसा, सादगी, स्वदेशी और सर्वोदय की मूल अवधारणाओं से गहरे जुड़े थे, जहाँ उन्होंने प्रकृति के साथ सामंजस्य, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, अति-उपभोग से परहेज और सभी जीवों के प्रति सम्मान पर जोर दिया। जिसे उनके लेखों और आंदोलनों (जैसे चरखा, खादी) के माध्यम से प्रचारित किया गया, जो आज भी टिकाऊ विकास और पर्यावरणीय नैतिकता के लिए प्रासंगिक है।

जनचेतना के माध्यम के तौर पर समाचार पत्र

महात्मा गांधी जी ने इंडियन ओपिनियन (1903, दक्षिण अफ्रीका), यंग इंडिया (1919) और हरिजन (1933) जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना का बीजारोपण किया। यंग इंडिया के 2 अक्टूबर 1924 के अंक में उन्होंने लिखा: "पृथ्वी सबकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है, पर एक भी व्यक्ति के लालच को नहीं"। यह वाक्य आज पर्यावरण नैतिकता का मूल मंत्र बन चुका है। हरिजन में वे लगातार स्वच्छता, गोबर गैस, चरखा और ग्रामोद्योग पर लेख लिखते रहे। उनके लिए स्वच्छता केवल शारीरिक नहीं, पारिस्थितिक दायित्व थी। 1937 में हरिजन में प्रकाशित लेख "हमारी गंदगी" में उन्होंने खुले में शौच और जल प्रदूषण को "राष्ट्रीय पाप" कहा (गांधी, हमारी गंदगी, 1937)। इस प्रकार गांधी जी ने पत्रकारिता को पर्यावरण शिक्षा का माध्यम बना दिया।

पर्यावरणीय संवाद के मंच के तौर पर गांधी जी की पत्रिकाएं

महात्मा गांधी जी नवजीवन (1919, गुजराती) और हिंदी नवजीवन के माध्यम से ग्रामीण भारत में रहने वाले लोगों के दानिक जीवन में आने वाली विभिन्न परेशानियों को लेकर संवाद करते है। इन पत्रिकाओं में वे किसानों को लिखते थे कि रासायनिक खाद के बजाय कंपोस्ट खाद का उपयोग करें, क्योंकि "धरती मांता है, उसे जहर मत दो" (नवजीवन, 1928)। उन्होंने बंजर भूमि पर वृक्षारोपण, तालाबों की सफाई और जल संरक्षण पर व्यावहारिक सुझाव दिए। ये लेख आज के कम्युनिटी जर्नलिज्म और विकास संचार के शुरुआती उदाहरण हैं। इतिहासकार रामचंद्र गुहा (2006) मानते हैं कि गांधी जी "भारत के पहले पर्यावरण पत्रकार" थे, क्योंकि उन्होंने प्रकृति को राजनीति का विषय बनाया।

महात्मा गांधी की पुस्तकों में सतत विकास की राह

महात्मा गांधी के पर्यावरणीय दर्शन को समझने के लिए यदि समाचार पत्र तात्कालिक संवाद थे, तो पुस्तकें गांधी के पर्यावरण दर्शन की बुनियाद थीं। हिन्द स्वराज के अलावा आश्रमवासी के लिए रचनात्मक कार्यक्रम (1941) में उन्होंने 18 सूत्री कार्यक्रम दिया, जिसमें खादी, ग्राम सफाई, नई तालीम और गो-सेवा शामिल थे। ये सभी प्रत्यक्ष रूप से सतत विकास से जुड़े हैं। मेरे सपनों का भारत में उन्होंने लिखा कि "आदर्श गाँव आत्मनिर्भर होगा, जहाँ ऊर्जा गोबर गैस से और वस्त्र चरखे से बनेगा" (गांधी म. , 1947)। यह अवधारणा आज के सर्कुलर इकोनॉमी और लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट (LiFE) मिशन से मेल खाती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

संयुक्त राष्ट्र का सतत विकास एजेंडा 2030 कहता है कि कोई भी पीछे न छूटे। गांधी जी का ग्राम स्वराज और अंत्योदय इसी भावना का विस्तार है। उन्होंने समाचार पत्रों के माध्यम से बताया कि पर्यावरण संरक्षण कोई सरकारी योजना नहीं, बल्कि हर नागरिक का व्रत है। उनकी पत्रकारिता ने प्रकृति को विषय से बदलकर मूल्य बनाया। वर्तमान में दुनिया के सामने जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण, पारिस्थितिकी तंत्र का तेजी से हो रहा पतन एक बड़ी चुनौती बनकर खड़े हो गए हैं। जिनसे निपटने के लिए तुरंत और एक असरदार पर्यावरण के संरक्षण को लेकर रणनीति तैयार करने की जरूरत है। गांधीवादी नज़रिया हमें इस संकट से उबरने के बहुत सारे मौके देता है। आज की पीढ़ी के लिए किफायती और सादी जिंदगी शायद मुमकिन न हो, लेकिन इन विचारों को समझदारी से अमल में लाने से धरती को आने वाली मुसीबतों से बचाने में मदद मिलेगी। लोगों के द्वारा अपनाई गई पर्यावरण अनुकूल तकनीक और तरीके, संस्थागत सहायता, जैसे न्यायपालिका, एनजीओ और समाजसेवियों की कोशिशें पर्यावरण को बचाने में मदद करती हैं। गांधी उस सोच के व्यक्ति थे, जिन्होंने लोगों की शांति, उनके जीवन के लिए मकसद और खुशहाल जिंदगी के लिए एक अच्छा विकल्प निकाला। गांधी जी सादगी, धीरे-धीरे और छोटेपन पर आधारित जिंदगी जीने के तरीके के पक्के समर्थक थे और उन्होंने इसे खुद पर कामयाबी से लागू किया। इसी बात ने उन्हें एक अलग तरह का पर्यावरणविद बनाया। जिनके विचार और उनके द्वारा पर्यावरण के संरक्षण को लेकर किए गए कार्य हमेशा प्रासंगिक हैं। जो आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ हवा, पानी के साथ ही एक स्वच्छ वातावरण प्रदान करने के लिए रास्ता दिखाते हैं। जिनके विचार को संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ ही देश दुनिया के तमाम मंचों पर चर्चा की जा रही है, और उनके विचारों का अमल भी हो रहा है। उन्होंने पारिस्थितिक संतुलन पर आधारित एक नई आर्थिक व्यवस्था की संकल्पना की। गांधीजी के ग्राम-प्रेमवाद को उनके पर्यावरण दर्शन का केंद्र माना जाता है। हालाँकि, एक ऐसे हरित भविष्य के निर्माण के लिए गांधीजी के विचारों की ओर लौटना आवश्यक है, जहाँ मानवीय लालच के लिए कोई जगह न हो।

संदर्भ

1. arterial.in. (2025, Novemeber 22). www.arterial.in. Retrieved from www.arterial.in: https://www.arterial.in/post/how-pollution-impacts-the-indian-economy
2. bestquotes. (2025, Novemebr 22). bestquotes.wordpress.com. Retrieved from bestquotes.wordpress.com: http://bestquotes.wordpress.com/200724/03//hello-world/
3. ecobuisnesslinks.com. (2025, November 22). www.ecobuisnesslinks.com . Retrieved from

www.ecobuisnesslinks.com: http://www.ecobuisnesslinks.com/simple_living_simple_life.htm

4. M.K.Gandhi. (1952). M.K.Gandhi, Truth. NavaG jivan, 1012-.
5. ईज्ञानकोश. (2014). GANDHI'S VIEWS ON NATURE AND ENVIRONMENT. https://egyankosh.ac.in, 15556-.
6. उपाध्याय, व. (2025, दिसंबर 1). महात्मा गांधी जयंती विशेष: बापू का जीवन और आचरण ही संवाद रहा. Retrieved from www.amarujala.com: https://www.amarujala.com/columns/blog
7. ए.एस, श. (2025, दिसंबर 1). हरित भविष्य के लिए गांधीजी के पर्यावरणीय विचार. Retrieved from www.mkgandhi.org: https://www.mkgandhi.org/articles/green_future.php
8. एएस, श. (2025, November 23). www.mkgandhi.org. Retrieved from www.mkgandhi.org: https://www.mkgandhi.org/articles/sustainable-development-goals-and-Gandhian-constructive-programmes.php
9. कुमारिया, प. (2025, November 23). www.gandhiashramsevagram.org. Retrieved from www.gandhiashramsevagram.org: https://www.gandhiashramsevagram.org/gandhi-articles/nature-and-man-gandhian-concept-of-deep-ecology.php
10. कौशिक, ड. अ. (2025, November 23). www.gandhiashramsevagram.org. Retrieved from www.gandhiashramsevagram.org: https://www.gandhiashramsevagram.org/gandhi-articles/mahatma-gandhi-and-environment-protection.php
11. गांधी. (1937). हमारी गंदगी. हरिजन , 251252-.
12. गांधी. (1954). Nature Cure. Ahmedabad: Navajivan Publishing House.
13. गांधी, ए. (1947). हिंद स्वराज,पृष्ठ 99. मद्रास : जी.ए. नटेसन एंड कंपनी.
14. गांधी, म. (1947). मेरे सपनों का भारत . नवजीवन प्रकाशन मंदिर , 10- 20 .
15. तिवारी, र. (2019). GANDHI AS AN ENVIRONMENTALIST. Indian journal of medical research, 110-.
16. त्रिपाठी, ए. (2007). Gandhi His Life and Views. New Delhi: Anmol Publication.
17. दास, ज. क. (2021). Gandhi and Environment. Odisha Review, 912-.
18. देबप्रिया, भ. (2019). Mahatma Gandhi and the Sustainable Development Goals. The Daily Star, 110-.
19. बोर्ड, क. प. (2025, November 22). cpcb.nic.in. Retrieved from cpcb.nic.in: https://cpcb.nic.in
20. मूलक्कट्ट, ड. ज. (2025, दिसंबर 6). महात्मा गांधी और पर्यावरण. Retrieved from www.teriin.org: https://www.teriin.org
21. राजगोपालन, ए. (2025, November 23). www.gandhiashramsevagram.org. Retrieved from www.gandhiashramsevagram.org: https://www.gandhiashramsevagram.org/gandhi-articles/environmental-crisis-and-relevance-of-gandhiji.php
22. शास्त्री, श. (1930). एप्रिसिएशन्स' इन एच.एस.एल. पोलक, महात्मा गांधी, पृष्ठ 3. मद्रास: जी.ए. नटेसन एंड कंपनी.
23. शेठ, प. (2020). इको-गांधी और पारिस्थितिक आंदोलन. http://www.gandhimuseum.org/sarvodaya/articles/ecogandhi.htm.
24. श्रीकृष्ण झा. (2020). महात्मा गांधी- एक अलग पर्यावरणविद. http://www.mkganthi.org/environment/jh.htm.
25. सरिका वर्मा, न. र. (2023). Mahatma Gandhi's View on Environment and Sustainable Development. Journal of Foundational Research, 110-.
26. सादिका, उ. (2023). Mahatma Gandhi: A Practical Activist of Environmental Sustainability in Early 20th Century India. Al Manhal Research Journal, 13-.
27. साहू, स. न. (2016). Mahatma Gandhi and Sustainable Development. Odisha Review, 110-.
28. हरिजन. (2025, November 28). A Picture of Village Swaraj. Retrieved from www.gandhi-manibhavan.org: https://www.gandhi-manibhavan.org/gandhian-philosoph
29. Rashmi, C. P., Jain, L., & Sharma, A. (2024). Cultivating public perception and policy initiatives: Understanding the impact of environmental journalism through focus group discussions and secondary data analysis. Current World Environment, 19(3), 1456.